MAHARAJA SURAJMAL BRIJ UNIVERSITY
BHARATPUR (RAJASTHAN)

SYLLABUS

B.A – HINDI (LITERATURE)

I & II SEMESTER

EXAMINATION-2023-24

डॉ. अरूण कुमार पाण्डेय
उपकुलसचिव
प्रभारी अकादमिक प्रथम

महाराजा सूरजमल ब्रज विश्वविद्यालय, भरतपुर (राज.)
बी.ए. – प्रथम सेमेस्टर (हिन्दी साहित्य)
प्रथम प्रश्न पत्र – आदिकाव्य एवं भक्तिकाव्य

1 क्रेडिट 25 अंक
6 क्रेडिट 150 अंक
प्रश्न पत्र 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन – 30 अंक

उद्देश्य (Objectives)	1. विद्यार्थियों को आदिकाल और भक्तिकाल की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, साहित्यिक आदि परिस्थितियों से अवगत कराना। 2. आदिकालीन और भक्तिकालीन काव्य तथा कवियों से परिचय कराना। 3. आदिकालीन साहित्य के स्वरूप, भाषा एवं शैली की विकास यात्रा से अवगत कराना। 4. भक्तिकालीन साहित्य और भक्ति आन्दोलन की अवधारणा स्पष्ट करना। 5. विद्यार्थियों में संवेदनात्मक अनुभूति विकसित करना।
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)	1. आदिकालीन परिवेश राजनीतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि परिस्थितियों से परिचित हो सकेंगे। 2. आदिकालीन शोध की नवीन दृष्टि का विकास हो सकेगा। 3. भक्तिकाल की सामान्य परिस्थितियों तथा विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे। 4. प्रमुख भक्त कवियों तथा उनकी रचनाधर्मिता से परिचित हो सकेंगे।

प्रश्न पत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्न पत्र तीन खण्डों (अ, ब, स) में विभक्त है।

खण्ड – अ के अंतर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरी प्रश्न है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाऐंगे। प्रत्येक प्रश्न 02 अंक का होगा।

खण्ड – ब के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या का है। जिसमें इकाई 2 इकाई 3 एवं इकाई 4 में निर्धारित पाठ से कुल 04 काव्यांश (एक कवि से एक) आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाऐंगे। प्रत्येक व्याख्या 10 अंक की होगी।

खण्ड – स के अंतर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबंधात्मक प्रश्न है, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई – 1

- आदिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- आदिकालीन साहित्य की अन्तरधाराएँ (सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, जैन साहित्य एवं रासो साहित्य)
- भक्तिकाव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
- भक्तिकाव्य की प्रमुख अन्तरधाराएँ (संतकाव्य, सूफीकाव्य, कृष्ण काव्य एवं राम काव्य)

इकाई – 2

ढोला मारू रा दूहा – संपादक–नरोत्तम दास स्वामी, सूर्यकरण पारीक, राम सिंह
दोहा संख्या– 8,9,10,19,20,21,37,38,40,49,52,61,69,112,116 = 15

विद्यापति – विद्यापति, संपादक – शिवप्रसाद सिंह
नन्दक नन्दन कदम्बेरि तरुतरे (8)
सुन रसिया अब न बजाऊ बिपिन बँसिया (9)
देख देख राधा रूप अपार (10)
चाँद सार लए मुख घटना करु लोचन चकित चकोरे (14)
विरह व्याकुल बकुल तरुवर, पेखल नंदकुमार रे (26)

2-11-23
(Dean, Faculty of Arts and convener)

2-11-23 (सदस्य)

2/11/23 (सदस्य)

2/11/23 (सदस्य)

डॉ. अरुण कुमार पाण्डेय
उपकुलसचिव
प्रभारी अकादमिक प्रथम

		कुंज भवन से चलि भेलि हे रोकल गिरधारी (36) सखि हे कतहु न देखि मधाई (55) सखि हे कि पुछसि अनुभव मोय (102)
नरपति नाल्ह	–	बीसलदेव रास, संपादक – माता प्रसाद गुप्त – 1,3,4,6,7,8,9,10

इकाई – 3

कबीरदास	–	कबीर ग्रंथावली, संपादक – श्यामसुंदर दास, परिमार्जित पाठ – पुरुषोत्तम अग्रवाल साखी – चेतावनी को अंग मन को अंग पद– मन रे जागत रहिये भाई (राग गौड़ी – 23) पांडे कौन कुमति तोहि लागी (राग गौड़ी – 39) हम न मरैं मरिहैं संसारा (राग गौड़ी–43) काहे री नलिनी तू कुमिलानी (राग गौड़ी–64) मन रे हरि भजि हरि भजि हरि भजि भाई (राग गौड़ी–122)
जायसी	–	जायसी ग्रंथावली, संपादक – रामचन्द्र शुक्ल सिंहलद्वीप वर्णन खण्ड, प्रथम 05 दोहे तक नागमति वियोग खण्ड, प्रथम 05 दोहे तक
तुलसीदास	–	विनय–पत्रिका (गीता प्रेस, गोरखपुर) केसव ! कहि न जाइ का कहिये (111) मन पछितैहै अवसर बीते (198) मोहि मूढ़ मन बहुत बिगोयो (245) श्रीरामचरितमानस (बालकाण्ड) (दोहा संख्या 229 से 234) (गीता प्रेस गोरखपुर) सुमिरि सीय नारद वचन उपजी प्रीति पुनीत...... निरखि निरखि रघुवीर छबि बाढ़इ प्रीति न थोरि।

इकाई – 4

सूरदास	–	भ्रमरगीत सार, संपादक – रामचन्द्र शुक्ल हमारे हरि हारिल की लकरी (52) निर्गुन कौन देस को बासी (64) बिन गोपाल बैरिन भई कुंजैं (85) उर में माखन चोर गड़े (95) ऊधो मन नाहीं दस–बीस (210) ऊधो भली करी अब आए (220) देखियत कालिंदी अति कारी (278) सँदेसो देवकी सों कहियो (375)
मीरां	–	मीरां पदावली, संपादक– शंभुसिंह मनोहर निपट बंकट छवि नैना अटके (6) मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरौ न कोई (10) मैं तो गिरधर के घर जाऊँ (12) राणाजी थे जहर दियो म्हे जाणी (22) मीरां मगन भई हरि के गुण गाय (23) जोगिया जी! निसदिन जोऊं बाट (25) हरि बिन कूँण गती मेरी (38) सखी री! मेरी नींद नसानी हो (56)
रसखान	–	रसखान रचनावली, संपादक – विद्यानिवास मिश्र पद संख्या – 1,2,6,8,11,14,15,31

2-11-23   2/11/23   2/11/23   गीता 2/11/23 (सदस्य)

डॉ. अरूण कुमार पाण्डेय
उपकुलसचिव
प्रभारी अकादमिक प्रथम

आन्तरिक मूल्यांकन हेतु किन्हीं दो विषयों पर निबंध लेखन (संभावित विषय) 2X15 = 30

- आदिकाल की पृष्ठभूमि (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ)
- आदिकाल का सीमांकन एवं नामकरण
- भक्तिकाल की पृष्ठभूमि (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ)
- भक्ति के उदय संबंधी विभिन्न मत
- भक्ति के निर्गुण और सगुण रूपों में समानता एवं अंतर .
- निर्गुण पंथ और कबीरदास
- 'श्रीरामचरितमानस' का महत्व
- सूरदास का वात्सल्य वर्णन
- सूफी मत की विशेषताएँ
- रसखान का कृष्ण–प्रेम।
- मीरां की विरह–वेदना

अनुशंसित ग्रंथ–

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ. नगेन्द्र, संपादित, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
3. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास– डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
4. हिन्दी सूफी काव्य की भूमिका– रामपूजन तिवारी
5. आधुनिक पूर्व हिन्दी साहित्य का इतिहास– डॉ. अशोक कुमार गुप्ता

2-11-23 2-11-23 2/11/23 2/11/23

डॉ. अरूण कुमार पाण्डेय
उपकुलसचिव
प्रभारी अकादमिक प्रथम

महाराजा सूरजमल ब्रज विश्वविद्यालय, भरतपुर (राज.)
बी. ए. – द्वितीय सेमेस्टर (हिन्दी साहित्य)
द्वितीय प्रश्न पत्र – कहानी एवं उपन्यास

1 क्रेडिट – 25 अंक
6 क्रेडिट – 150 अंक
प्रश्न पत्र – 120 अंक
आंतरिक मूल्यांकन – 30 अंक

उद्देश्य (Objectives)	1. विद्यार्थियों में कल्पना शक्ति और विश्लेषणात्मक योग्यता का विकास करना। 2. कथा साहित्य के विश्लेषण की समझ और संवेदनात्मक अनुभूति का विकास करना। 3. प्रमुख कथाकारों एवं उनकी रचनाधर्मिता का परिचय कराना। 4. कहानी तथा उपन्यास कला को विकसित करना
अधिगम प्रतिफल (Learning Outcomes)	1. जीवन की यथार्थ अनुभूति से परिचय हो सकेगा। 2. कथा लेखन तथा उसके प्रभाव का विश्लेषण सम्भव हो सकेगा। 3. आदर्श और सभ्य नागरिक बन सकेंगे। 4. आत्माभिव्यक्ति की भावना विकसित हो सकेगी तथा भावी लेखन की पृष्ठभूमि का विकास होगा।

प्रश्न पत्र का अंक विभाजन

यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों (अ, ब, स) में विभक्त है।

खण्ड–अ के अंतर्गत प्रश्न संख्या 1 अतिलघूत्तरी प्रश्न है, जिसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 10 प्रश्न पूछे जाऐंगे। प्रत्येक प्रश्न 02 अंक का होगा।

खण्ड–ब के अंतर्गत प्रश्न संख्या 2,3,4,5 सप्रसंग व्याख्या का है. जिसमें इकाई 2 एवं इकाई 3 में निर्धारित पाठ से एक–एक अवतरण (एक कहानी से एक) तथा इकाई 4 से दो अवतरण (उपन्यास) आंतरिक विकल्प सहित व्याख्या हेतु पूछे जाऐंगे। प्रत्येक व्याख्या 10 अंक की होगी।

खण्ड–स के अंतर्गत प्रश्न संख्या 6,7,8,9 निबंधात्मक प्रश्न है, जिसमें प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न आंतरिक विकल्प सहित पूछा जाएगा। प्रत्येक प्रश्न 15 अंक का होगा।

इकाई–1

कहानी – परिभाषा एवं तत्त्व
हिन्दी कहानी – उद्‌भव एवं विकास के प्रमुख चरण
उपन्यास – परिभाषा एवं तत्त्व
हिन्दी उपन्यास – उद्‌भव एवं विकास के प्रमुख चरण

इकाई – 2

उसने कहा था	–	चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
पूस की रात	–	प्रेमचन्द
आकाशदीप	–	जयशंकर प्रसाद
परदा	–	यशपाल

इकाई – 3

राजा निरबंसिया	–	कमलेश्वर
गदल	–	रांगेय राघव
सिक्का बदल गया	–	कृष्णा सोबती
तिरिछ	–	उदय प्रकाश

2-11-23 2-11-23 2/11/23 2/11/23 (सदस्य)

डॉ. अरूण कुमार पाण्डेय
उपकुलसचिव
प्रभारी अकादमिक प्रथम

इकाई – 4

महाभोज – मन्नू भंडारी (उपन्यास)

आंतरिक मूल्यांकन हेतु किन्हीं दो विषयों पर निबन्ध लेखन (संभावित विषय) 2X15=30

- कहानी एवं उपन्यास के स्वरूप में समानता एवं अंतर।
- हिन्दी कहानी के प्रमुख आन्दोलन – नयी कहानी, सचेतन कहानी, समानान्तर कहानी, साठोत्तरी कहानी, समकालीन कहानी।
- प्रेमचन्द की कहानी कला।
- पाठ्यक्रम में निर्धारित किसी एक कहानी की मूल संवेदना एवं शिल्प–विधान।
- उपन्यास के प्रकार (सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक)
- हिन्दी उपन्यास : विकास के चरण।
- हिन्दी उपन्यास परम्परा में प्रेमचन्द का महत्व।

अनुशंसित ग्रंथ–

1. महाभोज – मन्नू भण्डारी
2. मानसरोवर भाग–1–प्रेमचन्द
3. हिन्दी उपन्यास का इतिहास– गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
4. हिन्दी साहित्य एवं संवेदना का विकास– रामस्वरूप चतुर्वेदी
5. हिन्दी कहानी का विकास– मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
6. कहानी : नई कहानी– नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
7. कहानी की रचना प्रक्रिया– परमानन्द श्रीवास्तव, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
8. जयशंकर प्रसाद की कहानियों का शिल्प विधान–डॉ. अशोक कुमार गुप्ता, बोहरा प्रकाशन, जयपुर
9. प्रसाद के कहानी साहित्य में भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय चेतना के आयाम– डॉ. अशोक कुमार गुप्ता, गौतम बुक कम्पनी, जयपुर
10. प्रेमचन्द के उपन्यासों में पात्र संरचना– डॉ. नरेश चन्द गोयल, देशभारती प्रकाशन, नई दिल्ली
11. 'गोदान' में पात्र–संरचना– डॉ. नरेश चन्द गोयल, मधुशाला प्रकाशन, प्राइवेट लि., भरतपुर

2-11-23 2-11-23 2/11/23 2/11/23

अरूण कुमार पाण्डेय
उपकुलसचिव
प्रभारी अकादमिक प्रथम